

अध्याय 4

पत्ते ही पत्ते

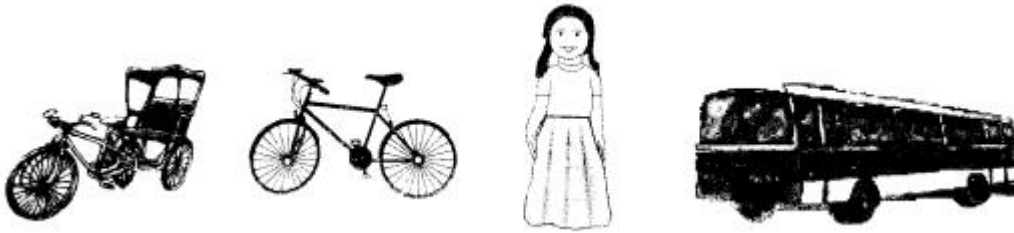
प्रश्न-अभ्यास

अब करने की बारी

बगीचे में जाओ। पत्ते देखो। उन्हें हल्के से हाथ लगाओ। कैसा लगा? आपस में बातें करो। अपने आस-पास से तरह-तरह की पत्तियाँ इकट्ठी करो। इन पत्तियों को कागज़ पर चिपकाओ। नीचे दी गई जगह पर पत्तियों के चित्र भी बनाओ।

उत्तर : विद्यार्थी स्वयं करें।









घर कैसे जाओगी?



उत्तर : मैं रिक्शा से घर जाती हूँ।

प्रश्न 1.

तुमने इनमें से किसकी सवारी की है? सही जगह पर 'हाँ' (✓) या 'नहीं' (x) का निशान लगाओ।



सवारी	मैंने सवारी की है	मैंने सवारी नहीं की है
रिक्शा 	✓	
बस 	✓	
रेलगाड़ी 	✓	
बैलगाड़ी 		×
साइकिल 	✓	
ऊँट 		×
स्कूटर 	✓	
भैंस 		×







तुम कैसे जाते हो?

उत्तर :

1. दादी के घर – रेलगाड़ी से
2. सिनेमा देखने – 'स्कूटर से।
3. स्कूल – "स्कूल बस से
4. होट/बाजार – पैदल या स्कूटर से

बताओ-

सवारी	टिकट लगेगा	पैसा लगेगा	मुफ्त
 रेलगाड़ी	✓		
 भैंस			✓

 रिक्शा		✓	
 साइकिल			✓
 ऊँट		✓	
 बैलगाड़ी		✓	
 बस	✓		
 गोदी			✓

नीचे क्या? ऊपर क्या?

प्रश्न 2.

गन्ना जमीन के ऊपर उगता है और मूली नीचे। सही जगह पर कुछ और चीजों के चित्र बनाओ।



उत्तर :



प्याज



आलू



गाजर



बैंगन

















मटर



टमाटर

बूझो मेरा रंग
बैंगन किस रंग का?

	<p>लाल</p> <p>..... टमाटर</p> <p>..... गाजर</p> <p>..... लाल कमीज</p>	<p>हरा</p> <p>..... धनिया</p> <p>..... पालक</p> <p>..... खीरा</p>	
			
	<p>बैंगनी</p> <p>..... बैंगन</p> <p>..... कमीज</p> <p>..... तितली</p>	<p>पीला</p> <p>..... आम</p> <p>..... नींबू</p> <p>..... मूँगफली, मकई, हल्दी</p>	
			
	<p>नीला</p> <p>..... आकाश</p> <p>..... सागर</p>	<p>काला</p> <p>..... काला नमक</p> <p>..... काली मिर्च</p>	
			

दो अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1: इस कहानी की लेखिका कौन है?

उत्तर : इस कहानी की लेखिका वर्षा सहस्रबुद्धे हैं।

प्रश्न 2: दीदी ने बच्चों से कैसे खेलने को कहा?

उत्तर : दीदी ने बच्चों से कहा कि मैं पाँच तक गिनती करूंगी और तुम लोग एक-एक करके गोला बनाकर बैठ जाओगे।

प्रश्न 3: दीदी ने कौन-कौन से पत्ते लेकर आए थे?

उत्तर: दीदी ने तरह-तरह के पत्ते लेकर आए थे, जैसे लंबे, गोल, छोटे, बड़े, लाल, पीला, कथई रंग का, और विभिन्न आकृतियों वाले पत्ते।

प्रश्न 4: बच्चों ने पत्तों को देखकर कैसा आभास किया?

उत्तर : बच्चों ने पत्तों को छूकर देखा कि कुछ पत्ते एक तरफ़ से मुलायम थे और दूसरी तरफ़ से खुरदरा, कुछ पत्ते बंदनवार जैसे लग रहे थे, और कुछ पत्ते विभिन्न आकृतियों और रंगों के साथ थे।

चार अंक के प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 5: दीदी ने बच्चों के साथ कौन-कौन से खेल खेले थे?

उत्तर : दीदी ने बच्चों के साथ 'गोला बनाने का खेल' खेला था, जिसमें वह पाँच तक गिनती करती और बच्चे गोला बनाकर बैठते थे।

प्रश्न 6: पत्तों की विविधता के आधार पर, आपको कैसा आभास हुआ कि पत्ते विभिन्न हैं?

उत्तर : पत्तों की विविधता के आधार पर, हमें यह आभास हुआ कि पत्ते विभिन्न आकृतियों, रंगों, और लकीरों के साथ विभिन्न हैं। कुछ पत्ते मुलायम और कुछ खुरदरा थे, कुछ बंदनवार और कुछ अनूठे आकृतियों के साथ थे।

प्रश्न 7: इस कहानी में कैसे दिखता है कि बच्चों को दीदी के साथ खेलने में बहुत आनंद आया?

उत्तर : इस कहानी में बच्चों को दीदी के साथ खेलने में बहुत आनंद आया, क्योंकि वे उसके साथ गोला बनाने का खेल खेलकर मस्ती कर रहे थे और उन्हें उनकी दीदी के साथ खेलने में खुशी मिल रही थी।

प्रश्न 8: बच्चों ने पत्तों को देखकर कैसे अनुभव किया?

उत्तर : बच्चों ने पत्तों को छूकर देखा कि कुछ पत्ते एक तरफ़ से मुलायम थे और दूसरी तरफ़ से खुरदरा, कुछ पत्ते बंदनवार जैसे लग रहे थे, और कुछ पत्ते विभिन्न आकृतियों और रंगों के साथ थे। इससे उन्हें विभिन्नता और रंग-बिरंगाई का अनुभव हुआ।

कहानी का सारांश

इस कहानी की लेखिका वर्षा सहस्रबुद्धे हैं। यह कहानी मौज मस्ती का खेल खेलते बच्चे और उनकी दीदी की है। खेल प्रारंभ होता है। दीदी बच्चों से कहती हैं कि मैं पाँच तक गिनती करूँगी और तुम लोग एक-एक करके गोला बनाकर बैठ जाओगे। दीदी के गिनती पूरी करते ही सभी बच्चे गोला बनाकर बैठ गए। आज दीदी पत्ते लेकर आई थीं और बच्चों को उनके बारे में जानकारी देना चाहती थीं। दीदी अपने साथ तरह-तरह के पत्ते लेकर आई थीं। कुछ पत्ते लंबे, कुछ गोल, कुछ छोटे और कुछ बड़े थे। एक पत्ता लाल, एक पीला और एक कथई रंग का था। एक पत्ते पर नसें दिख रही थीं, एक पत्ता कतरीला था। एक पत्ते का डंठल एकदम सीधा था तो एक पत्ता झालरवाला था। बच्चों ने जब पत्तों को छूकर देखा तो कोई पत्ता एक तरफ़ से मुलायम था तो दूसरी तरफ़ से खुरदरा। कुछ पत्ते बंदनवार जैसे लग रहे थे।

शब्दार्थ : कथई – कत्थे के रंग का। नस – नाड़ी। कतरीला – कटे हुए आकार का। डंठल – पौधों की शाखा। झालर – शोभा के लिए बनाया गया लहरदार किनारा। मुलायम – कोमल। खुरदरा – रूखा। बंदनवार – वंदनमाला।